ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

भारत में सूअर पालन की वर्तमान स्थिति एवं महत्व

डॉ. अनूप कुमार, डॉ.अमृता प्रियदर्शी, डॉ. प्रत्यांशु श्रीवास्तव, डॉ. विकास सचान, एवं डॉ.अनुज कुमार

मादा पशु रोग विज्ञान विभाग, उ. प्र. पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गौ अनुसंधान संस्थान, मथुरा, उत्तर प्रदेश

सूअर भारतीय पशुधन क्षेत्र का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग हैं। सूअरों को आम तौर पर समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग द्वारा पाला जाता है , जो न केवल उन्हें बेहतर पोषण सहायता प्रदान करता है बल्कि आजीविका के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में भी काम करता है। विभिन्न पशुधन प्रजातियों में, सूअर पालन ब्रॉयलर के बाद मांस उत्पादन का सबसे संभावित स्रोत है। स्वस्थ पशु प्रोटीन के सस्ते स्रोत के रूप में सूअर समाज की आवश्यकता को पूरा कर सकते हैं। मांस उपलब्ध कराने के अलावा, सूअर बाल और खाद आदि का भी स्रोत है।

वैश्विक स्तर पर, 2022 में सुअर की आबादी 784.20 मिलियन दर्ज की गई है। 20वीं पशुधन जनगणना के आंकड़ों के अनुसार भारत में कुल 9.06 मिलियन सूअर हैं। भारत में कुल 13 स्वदेशी सूअरों को राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो द्वारा मान्यता प्रदान की गई है , जिनमें घुंघरू, नियांग मेघा, अगोंडा गोवा, तेनी वो, निकोबारी, डूम, ज़ोवाक, घुर्रा, माली, पूर्णिया, बांदा, मणिपुरी ब्लैक और वाक चंबिल शामिल हैं। देशी सूअरों का शरीरिक भार विदेशी सूअरों की अपेक्षा लगभग आधा होता है । इनकी प्रजनन क्षमता जैसे लैंगिक परिपक्वता , बच्चे का जन्म दर भी विदेशी नस्लों की अपेक्षा काफ़ी कम होती है । इसलिए सूअर पालक को अधिक अर्थ लाभ के लिए लार्ज हवाइट यार्क शायर या लैंड्रेस जैसी नस्ल के सूअरो का पालन करना चाहिए । यह नस्लें भारतीय वातावरण के लिए उपयुक्त है । इन प्रजातिओं की मादा लगभग 8 माह में व्यस्क हो जाती है तथा प्रति ब्यात 8 - 12 बच्चे , प्रतिवर्ष दो ब्यात की दर से बच्चे जन्मती है । इसके बच्चे एक वर्ष में 70 से 90 किलोग्राम तक शारीरिक वजन प्राप्त कर लेते हैं । इन नस्लों के सुअर सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों को पौष्टिक मांस में परिवर्तन करने की अधिकतम क्षमता (3.50 रू 1) रखती है ।

सूअर पालन के फायदे और उपयोग

- सूअर कम उम्र में ही यौन परिपक्वता तक पहुंच जाते हैं। एक सूअर का 8-9 महीने की उम्र में ही प्रजनन कराया जा सकता है और सामान्यतः वह साल में दो बार प्रजनन कर सकती है।
- सूअर व्यवसाय स्थापित करना आसान है, और इसके लिए घर निर्माण और उपकरण खरीदने के लिए छोटे उद्यम/निवेश आसानी से प्राप्त किए जा सकते है ।
- सूअरों के आहार के लिए ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ती है । सब्जी, फल के छिलके, बचा हुआ खाना इत्यादि इन पशुओं को दिया जा सकता है अर्थात् सुअर के लिए आहार आसानी से

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

उपलब्ध होता है । प्याज के छिलके , लहसुन के छिलके इनको आहार के रूप में नहीं देने चाहिए ।

- सूअर से 80 प्रतिशत खाने योग्य मांस प्राप्त होता है जिसमें 15 से 20 प्रतिशत प्रोटीन होता है । सूअर का मांस तुलनात्मक रूप से सबसे सस्ता पशु प्रोटीन स्रोत है। इसके अलावा मांस में ऊर्जा, खनिज (फास्फोरस , लोहा) एवं विटामिन (थायमिन , रिबोफ्लेविन, नाईसिन, सायनोकोबालामिन) प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इन्ही कारणों से सुअर के मांस की भारत के घरेलू बाज़ार में अच्छी माँग है । सुअर उत्पादों में प्राथमिक वस्तुओं जैसे सूअर का मांस , प्रोसेस्ड खाद्य उत्पाद जैसे सॉसेज और स्मोक्ड हैम , स्नैक फूड के रूप में खाए जाने वाले उत्पाद शामिल हैं।
- सूअर तेजी से वसा संग्रहित करते हैं जिसके लिए पोल्ट्री फ़ीड , साबुन, पेंट और अन्य रासायनिक उद्योगों से मांग बढ़ रही है। इसके अतिरिक्त सूअर की चर्बी मोमबत्ती , क्रीम, मलहम, तथा पशु आहार बनाने के काम आती हैं।
- सूअर रक्त , चीनी शुद्ध करने , बटन, जूतों की पालिश, दवाईयाँ, ससेज, पशु आहार, खाद, वस्त्रों की रंगाई, छपाई हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
- मानव दवाएं और इंजेक्शन अंतःस्रावी ग्रंथियों जैसे पीनियल , थायरॉयड, पैराथायराइड, थाइमस, पिट्यूटरी, अग्नाशय, अधिवृक्क, आदि का उपयोग करके उत्पादित किए जाते हैं।
- औद्योगिक जिलेटिन बनाने के लिए सुअर कोलेजन का उपयोग किया जाता है। खुर , आंत और हड्डियाँ सभी का उपयोग कई औद्योगिक उत्पादों के उत्पादन में किया जाता है।
- सूअरों की खाद का उपयोग उर्वरक के साथ-साथ मछली उत्पादन में भी उपयोग किया जाता है।
- प्रति सूअर लगभग 250 - 350 ग्राम बाल प्राप्त होता है जिसके उपयोग से बहुत अच्छी गुणवत्ता वाले पेंट ब्रश तथा शेविंग ब्रश बनाये जाते।
- स्वच्छ भारत अभियान के तहत प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन में भी सुअर पालन का प्रभावी योगदान हो सकता है ।

भारत में सूअर पालन की स्थिति

भारत के पशुपालन और मांस उद्योग के एक अध्ययन के अनुसार , हाल के वर्षों में , सुअर पालन ने लाभ मार्जिन (60 %) के मामले में अन्य सभी उप-उद्योगों , जैसे डेयरी (10 %) और पोल्ट्री (30%) को पीछे छोड़ दिया है। उत्तर पूर्व भारत के आठ राज्य में देश के बाकी हिस्सों की तुलना में पोर्क की खपत बहुत अधिक है । नागालैंड में प्रति व्यक्ति द्वारा इसका सर्वाधिक उपयोग किया जाता है । दक्षिण भारत में गोवा और कोलकाता (पश्चिम बंगाल) में अप्रवासियों के मध्य सूअर का मांस एक लोकप्रिय खाद्य पदार्थ है भारत और नेपाल में सुअर की मांस की काफी अच्छी मांग है। हालांकि क्षेत्रीय मांग के अलावा विदेशों में भारत से इसके मांस का बड़ी मात्रा में निर्यात किया जाता है। भारत से प्रतिवर्ष लगभग 6 लाख टन से ज्यादा सूअर का मांस दूसरे देशों में निर्यात किया जाता है। यह ऐसा पशु है जिसके मांस से लेकर चर्बी तक को काम में लिया जाता है। इसके मांस का प्रयोग मुख्य रूप से सौंदर्य प्रसाधनों और कैमिकल के रूप में प्रयोग होता है ।सुअर पालन के लिए सरकारी संस्था जैसे नाबार्ड और सरकारी बैंक ऋण के रूप में वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करवाती है। इस व्यवसाय की शुरुआत के लिए वैसे तो आने वाला खर्च उनकी संख्या , प्रजाति और रहने की व्यवस्था पर निर्भर करता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

सरकारी तथा अन्य व्यवस्थित फ़ार्म (रामपुर ; उत्तर प्रदेश, जयपुर पिग्रीस, पोलर जेनेटिक्स; जालंधर इत्यादि) द्वारा विदेशी नस्ल के नर सूअर उपलब्ध करवाए जाते है जिससे सुअर पालक देशी सूअरों का नस्ल सुधार करवाकर अधिकाधिक लाभ कमाते है । इस प्रकार प्राप्त संकर नस्ल के सूअर ऊष्मा एवं रोग प्रतिरोधी होते हैं तथा ग्रामीण परिवेश में भली द भांति पाले जा सकते हैं ।भारत सरकार के द्वारा कई योजनाओं (नेशनल लाइवस्टॉक मिशन) के तहत सूअर पालकों को तकनीकी मदद , वित्तपोषण और प्रशिक्षण प्रदान करवाया जाता है ।

भारत में सुअर पालन की चुनौतियाँ और अवसर

अत्यधिक उपयोगी होने के बावजूद भारतीय परिवेश में सुअर पालन में कई बाधाएँ है। प्रमुख चुनौतियों के रूप में सांस्कृतिक एवं सामाजिक बाधाएँ , नस्ल सुधार का ख़राब स्तर , मक्का जैसे सांद्रित आहार की कठिन उपलब्धता, और बीमारी का प्रकोप (अफ्रीकन स्वाइन फीवर) इत्यादि हैं । अधिक से अधिक आर्थिक लाभ कमाने के लिए इन कमियों को दूर करने के साथ साथ बाज़ार चौनल को स्थापित करना , उचित उत्पाद मूल्य प्राप्त होना , और प्रभावी आपूर्ति श्रृंखला बनाना आवश्यक है। अन्य मांस उत्पादक उद्योगों की तुलना में यह अधिक मेहनत वाला काम है। सूअर फार्म में चारा हमेशा सबसे बड़ा लागत (60-80%) कारक होता है इसलिए फ़ीड लागत को यथासंभव कम रखने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए।

सुअर पालन एक ऐसा उद्योग है जो खाद्य सुरक्षा और विकास की दिशा में भारत की यात्रा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है । यह हमारे माननीय प्रधान मंत्री के दृष्टिकोण जो की किसानों की आय दोगुनी करने और राष्ट्र निर्माण में मदद करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बन रहा है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि बढ़ती मांग और स्व रोजगार के इस दौर में सुअर पालन उद्योग ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने की क्षमता रखता है। हालाँकि कठिनाइयाँ अभी भी मौजूद हैं , परंतु सक्रिय पहल , सकारात्मक दृष्टिकोण, सरकारी सहायता और तकनीकी प्रगति से सुअर पालन भारत में गरीबी निवारण एवं स्व-रोज़गारियों के उज्ज्वल भविष्य का माध्यम बन सकता है ।